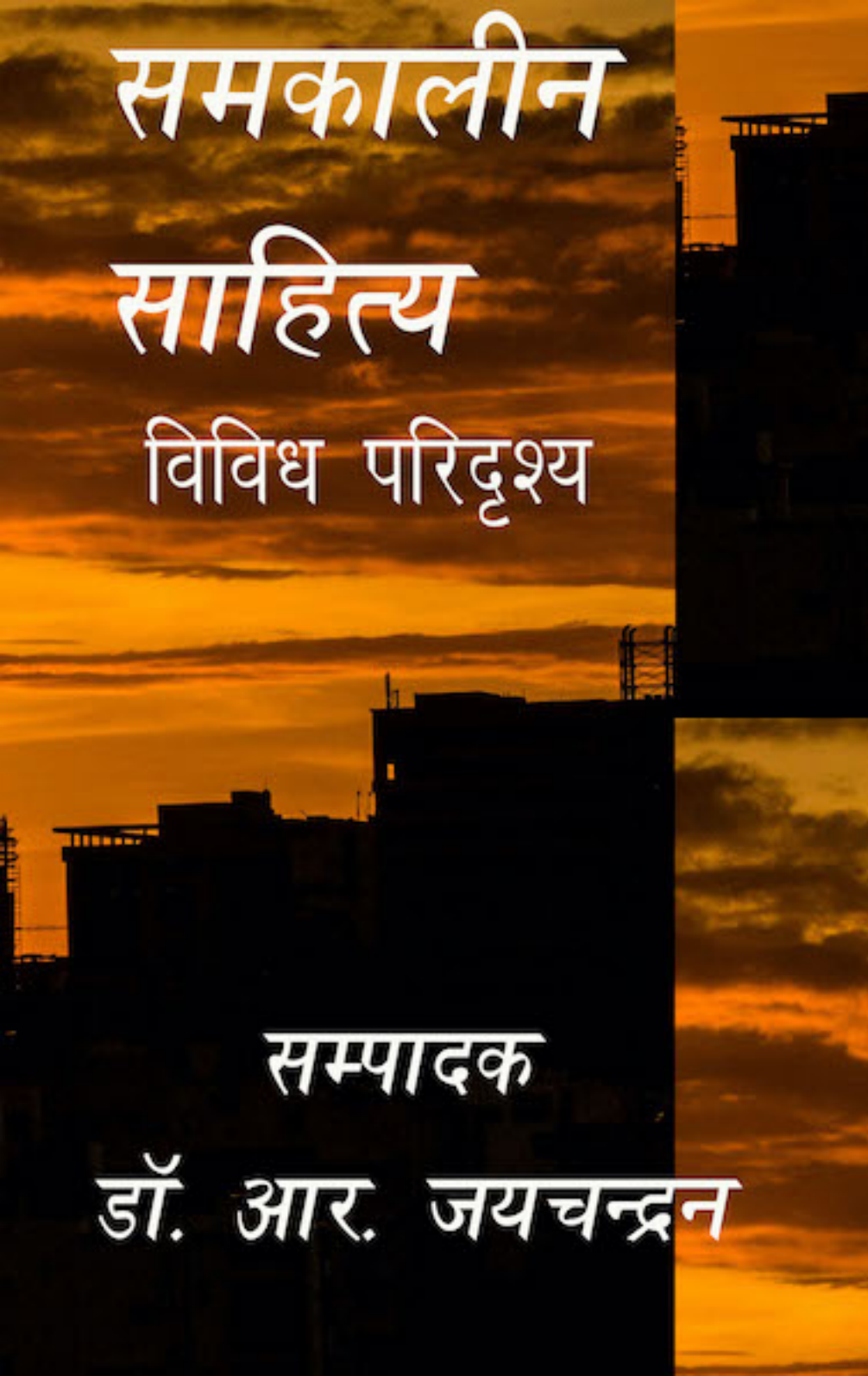
समकालीन
साहित्य
विविध परिदृश्य
सम्पादक
डॉ. आर. जयचन्द्रन

समकालीन साहित्य : विविध परिदृश्य

संपादक

डॉ. आर. जयचन्द्रन

मेरे स्वर्गीय गुरुजनों को .....

प्रो. ए.वी.एन. पोट्टि,

प्रो. हरिहरमणि,

प्रो. ओ.एन. मुरलीधरन

एवं

प्रो. अनंतरामय्यर जी

को सादर....

संपादकीय

''समकालीन साहित्य : विविध परिदृश्य'' शीर्षक पुस्तक की यह प्रति मेरे लिए अत्यंत गौरव एवं हर्ष की बात है क्योंकि इसमें जिन-जिन विषयों पर लेखक-लेखिकाओं ने आलेख लिखे हैं, विषय की दृष्टि से उनकी प्रासंगिकता अत्यन्त मायने रखने वाली है । इस पुस्तक के अनुक्रम में ही दो भागों में लेखों को संग्रहीत कर दिया गया है, प्रथम भाग में समकालीन कविता एवं तत्सम्बन्धी विविध आलेखों को जोड़ा गया है और द्वितीय भाग में दलित आन्दोलन, स्त्री प्रतिरोध एवं समकालीन कथा साहित्य के भिन्न-भिन्न पहलुओं पर विचारोत्तेजक लेखों को समाविष्ट किया गया है। हमारी उम्मीद है कि प्रस्तुत संकलन के लेख गणमान्य पाठकों की जिज्ञासाओं को तृप्त करने में सहायक सिद्ध होगी ।

इस पुस्तक के प्रकाशन में सहयोग देने वाले सभी व्यक्तियों के प्रति अत्यंत आभार प्रकट करना मेरा फर्ज बनता है । इस पुस्तक की सफलता के लिए जिन-जिन लेखक-लेखिकाओं ने सहयोग देकर हमारा धैर्य बढ़ाया है उन सबके प्रति हम आभार प्रकट कर रहे हैं । प्रूफ पठन को सुचारु रूप से कर मेरे श्रम को सरल बनाने के लिए हमारे विभाग की प्राध्यापिकायें-डॉ. लीना बी.एल. एवं डॉ. अनूपा कृष्णन ने काफी प्रयास किया है । अत: इन दोनों के प्रति हम तहे दिल से अपना आभार प्रकट करना चाहते हैं । अंत में मुद्रण कार्य में हमारी मदद करने एवं अविलम्ब कार्य कर समय पर इस पुस्तक को प्रकाशित करने के लिए **अमन प्रकाशन, कानपुर** के कर्मी दल के प्रति भी हम आभारी हैं ।

– डॉ. आर. जयचंद्रन

अनुक्रम

भाग – 1

1. समकालीन हिन्दी कविता और पर्यावरण चिंतन / **डॉ. आर. जयचन्द्रन** 11
2. रामविलास कृत 'निराला' : जीवन और रचना के साक्ष्य / **शशि मुदीराज** 20
3. परिस्थिति सौन्दर्यशास्त्र-समकालीन हिन्दी कविता के सन्दर्भ में / **डॉ. बाबू जोसफ़** 27
4. 'गंगातट' में पारिस्थितिक सौन्दर्य के बदलते परिवेश / **डॉ. ज्योति. एन.** 35
5. पवन करण की कविताएँ : अभिव्यक्ति के विभिन्न आयाम / **डॉ. अंबिली. वी.एस.** 39
6. समकालीन जीवन यथार्थ का दर्पण (साँझी है रोशनी-रामनिवास मानव) / **सिमि. जी** 48
7. नीलोत्पल की कविताओं में पर्यावरण-चेतना / **डॉ. आशा. एस. नायर** 53
8. समकालीन हिन्दी कविता में नारी चेतना / **डॉ. लता वी. एस.** 58
9. इक्कीसवीं सदी की हिन्दी कविता / **डॉ. कविता डी.के.** 62
10. नये कवि : समय और समाज की गवाही / **श्रीदेवी एस.** 65
11. वर्तमान यथार्थ के परिप्रेक्ष्य में 'अतिक्रमण' / **अन्सा. ए.** 73
12. नवें दशक की हिन्दी कविता : एक विश्लेषण / **डॉ. मंजुषा. के.** 79
13. समकालीन कविता के विकास में पत्रिकाओं का योगदान / **डॉ. आशाराणी. बी.पी.** 89
14. केरल में रचित समकालीन हिन्दी कविताओं में प्रकृति और पारिस्थितिक बोध : डॉ. पी.वी. विजयन के विशेष संदर्भ में / **आशा देवी. एम.एस.** 94

भाग – 2

1. दलित स्त्री आंदोलन तथा साहित्य-अस्मितावाद से आगे / **बजरंग बिहारी तिवारी** 101
2. 'अनबीता व्यतीत'-पर्यावरणीय हादसे का चलचित्र / **डॉ. प्रमोद कोवप्रत** 118
3. उत्तराधुनिक हिन्दी कथा साहित्य / **डॉ. शीला. टी. नायर** 123

4. जंगल की संपदा : 'जंगल जहाँ शुरू होता है' के संदर्भ में / **डॉ. गिरिजा कुमारी. आर.** 127
5. अनबीता व्यतीत में अभिव्यक्त पारिस्थितिक सौन्दर्य / **डॉ. प्रदीपा कुमारी. आर.** 133
6. हरनोट की कहानियों में बदलते सौन्दर्यबोध / **डॉ. प्रकाश. ए.** 137
7. जीवन्तता की खोज-'कौन नहीं अपराधी' उपन्यास में / **डॉ. एस.आर. श्रीकला** 141
8. स्त्री का प्रतिरोध और वर्तमान हिन्दी कहानी / **डॉ. जयकृष्णन. जे** 145
9. इला : अत्याधुनिक जेनेटिक इंजीनियरिंग का प्रतीक / **डॉ. लीना. बी.एल.** 151
10. महानगरीय संस्कृति : मृदुला गर्ग और माधविक्कुट्टी की कहानियों में / **डॉ. अनूपा कृष्णन** 158
11. मधु कांकरिया के कथा-साहित्य में पुरुष सत्ता और स्त्री की प्रतिक्रिया का स्वर (स्त्री विमर्श के विशेष संदर्भ में) / **शबाना हबीब** 163
12. सुभाष पंत कृत 'पहाड़ चोर' में पर्यावरणबोध / **के. राधिका** 171
13. समकालीन हिन्दी और मलयालम कहानियाँ : स्त्री विमर्श के संदर्भ में / **चित्रा. वी.एस.** 176
14. समकालीन हिन्दी साहित्य में दलित आत्मकथाएँ / **डॉ. इन्दू. के.वी.** 181
15. शिक्षा क्षेत्र की विकृत परिस्थितियों का चित्रण : 'दीक्षान्त' और 'अंधेरे का ताला' में / **धन्या स्टीफन** 186
16. समकालीन हिन्दी कहानियों में प्रतिबिंबित बाज़ारवाद और उपभोक्तावाद / **अनन्त लक्ष्मी एन.बी.** 191
17. समकालीन उपन्यास / **डॉ. दीपक के. आर.** 195

भाग – 1

1

समकालीन हिन्दी कविता और पर्यावरण चिंतन

–डॉ. आर. जयचन्द्रन

समकालीन कविता के प्रति आम पाठकों की पहली शिकायत यही रहती है कि यह कविता समझ में नहीं आती । यह कविता दुरूह है । जबकि पहले की कविता सहज और सुगम होती थी तो यहाँ जनता का दर्द परिवेश की तड़प बनकर कविता बन गया है ।

समकालीन कविता विचारों के गहरे तनावों-दबावों से विवश होकर रची जाती है, यहाँ महामानव और लघुमानव की बहस को समाप्त करता हुआ सामान्य मानव केन्द्र में आ गया है । वस्तुतः हर युग की कविता अपने युग के मनुष्य को परिभाषित करने की कोशिश करती है, इसलिए कविता या सृजन कर्म में निरंतर परिस्थितियों के घात-प्रतिघात से बदलती हुई मनोभूमिका का अध्ययन करना आवश्यक हो जाता है । रचना अपने युग के यथार्थ की टकराहट से ही राह बनाती है, व्यापक अर्थों में कह सकते हैं कि परिवेश ही समकालीन काव्य सर्जना की मूल प्रेरणा है ।

परिवेशजन्य स्थितियों को साहित्य के साथ कैसे जोड़कर देखा जा सकता है, और परिवेशजन्य, पर्यावरण सम्बन्धी, युद्धों को किस प्रकार साहित्य एवं संस्कृति में स्थान दिया गया है इसका आकलन निम्नांकित पहलुओं की मदद से संभव हो सकता है-

एनिमेशन : भौतिक साधन में चेतना का आरोप है । जब भौतिक साधन में चेतना को आरोपित किया जाता है तब निम्न प्रकार का एक त्रिकोण बनता है ।

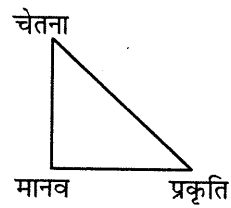

एनिमेशन से रसायनशास्त्र तक की यात्रा में युक्ति-मिश्रण-रूपांतरीकरण से बढ़कर ऊर्जा का उत्पादन भी संभव होता है । 'चेतना' ईश्वर द्वारा नियंत्रित एक तत्व